भाषा की परिभाषाएँ

डॉ. संतोष येरावार
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
जि. नांदेड़

भाषा

- भाषा शब्द 'भाष' धातु के संयोग से बना है। जिसका अर्थ है बोलना या कहना, अर्थात भाषा वह है जो बोली और कही जा सके, उसमें ध्वन्यात्मक हो।

- *हम सामान्यत: भाव की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त विभिन्न साधनों को भाषा कहते हैं।*

भाषा के प्रकार

भाषा के तीन रूप होते है-

(1) मौखिक भाषा

(2) लिखित भाषा

(3) सांकेतिक भाषा।

भाषा की परिभाषाएँ :

पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाएँ

प्लेटो

"भाषा और विचार में थोड़ा सा अंतर है, विचार आत्मा की मुक या ध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा दी जाती है।"

ए एच गार्डिनर

"विचारों की अभिव्यक्ति के लिए व्यक्त, ध्वनि संकेतों के व्यवहार को भाषा कहते हैं।"

➢ हेनरी स्वीट

"व्यक्त ध्वनियों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति को भाषा कहते हैं। "

➢ ब्लॉक एवं ड्रैगन के अनुसार

"भाषा मानव ज्ञानेंद्रियों से उच्चारित यादृच्छिक रूढ़ एवं प्रतीकों या ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा एक मनुष्य समुदाय के लोग परस्पर विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।"

भारतीय भाषा – वैज्ञानिकों की परिभाषाएँ

- **डॉ. श्यम सुन्दर दास -**

मनुष्य मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।

- **डॉ. बाबूराम सक्सेना**

जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनियम करता है, उसको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।

➢ आचार्य कामता प्रसाद गुरू

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भलीभाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकता है।

➢ आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा

जिसकी सहायता से मनुष्य परस्पर विचार विनिमय या सहयोग करता है, उस यादृच्छिक रूढ़ ध्वनि- संकेत- प्रणाली को भाषा कहते हैं।

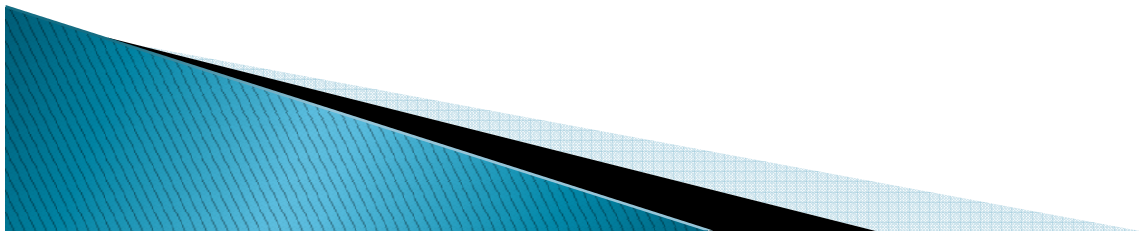

➢ डॉ. भोलानाथ तिवारी

भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चारित मूलत: प्राय: यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा-समाज के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

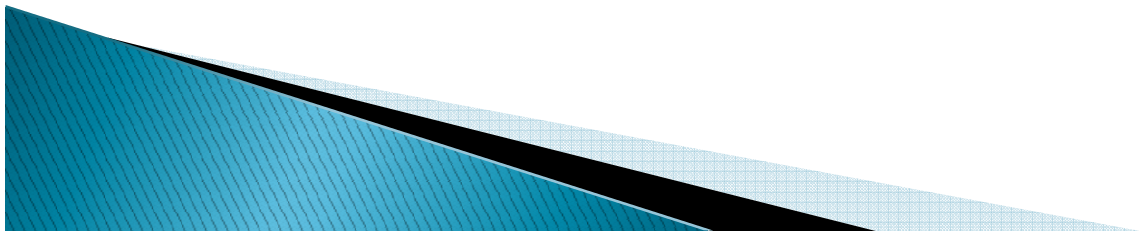

डॉ सरयू प्रसाद अग्रवाल

"भाषा वाणी द्वारा व्यक्त स्वच्छंद प्रतीकों कि वह रीतिबद्ध पद्धति है, जिसे मानव समाज अपने भावों का आदान–प्रदान करते हुए एक दूसरे को सहयोग देता है।"

डॉ देवी शंकर द्विवेदी

"भाषा यादृच्छिक व प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से मानव समुदाय परस्पर व्यवहार करता है।"

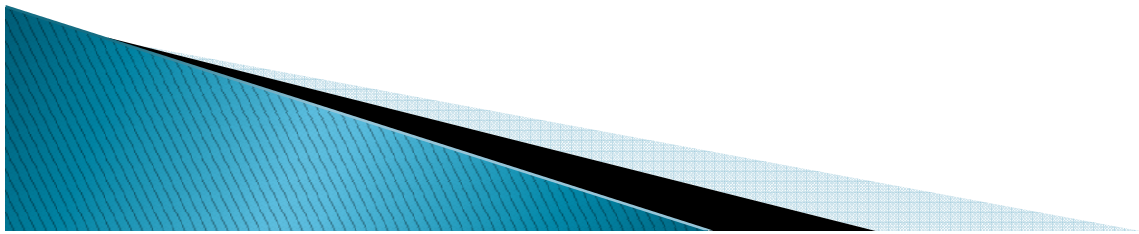

रवीन्द्रनाथ :

'भाषा वागेन्द्रिय द्वारा नि:स्तृत उन ध्वनि प्रतीकों की संरचनात्मक व्यवस्था है जो अपनी मूल प्रकृति में यादृच्छिक एवं रूढ़िपरक होते हैं और जिनके द्वारा किसी भाषा-समुदाय के व्यक्ति अपने अनुभवों को व्यक्त करते हैं, अपने विचारों को संप्रेषित करते हैं और अपनी सामाजिक अस्मिता, पद तथा अंतर्वैयक्तिक सम्बन्धों को सूचित करते हैं।'

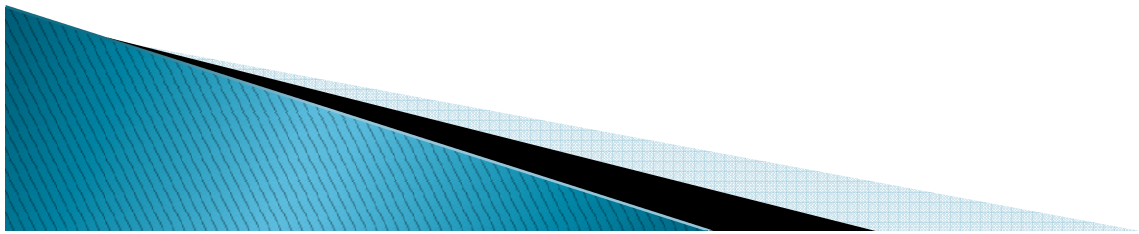

श्री नलिनि मोहन सन्याल का कथन है –

"अपने स्वर को विविध प्रकार से संयुक्त तथा विन्यस्त करने से उसके जो-जो आकार होते हैं उनका संकेतों के सदृश व्यवहार कर अपनी चिन्ताओं को तथा मनोभावों को जिस साधन से हम प्रकाशित करते हैं, उस साधन को भाषा कहते हैं।"

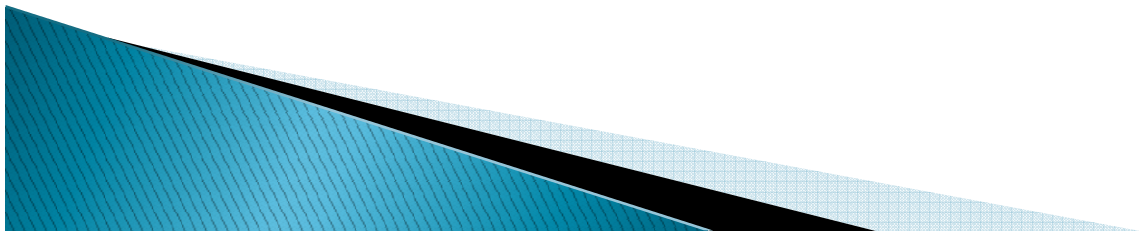

आचार्य किशोरीदास :

'विभिन्न अर्थों में संकेतित शब्दसमूह ही भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने विचार या मनोभाव दूसरों के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं।"